डॉ० कविता कुमारी सिंह

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

पी० जी०, तृतीय सेमेस्टर,
चतुर्दश पत्र

विषय - काव्य-रीति का शेष भाग

① वैदर्भी रीति - "अर्थ गाम्भीर्य" तथा वक्रोक्ति से रहित स्पष्ट, सरल, कोमल तथा स्वभावोक्ति से परिपूर्ण संगीत के समान श्रुति मधुर रचना विन्यास वैदर्भ मार्ग है। उदाहरण —

" तुम कनक किरण के अंतराल में लुक
छिपकर चलते हो क्यों?
हे! लाज भरे सौंदर्य बता दो मौन बने रहते
हो क्यों?" — माधुर्य गुण।

~~का~~ हिन्दी के रीतिकालीन कवियों ने इस रीति का भरपूर प्रयोग किया है। बिहारी के इस दोहे में इस रीति की छटा देखा जा सकता है —

'रस सिंगार मंजनु किये कंजनु भंजनु दैन।
अंजनु रंजनु ही बिना खंजनु गंजनु मैन॥
(बिहारी सतसई)

यहाँ पर अनुस्वार का भरपूर प्रयोग हुआ है। समासिक पदावली नहीं है। ~~व~~ पद में माधुर्य है।

अर्थात माधुर्य व्यंजक वर्णों से युक्त, समासरहित ललित रचना को "वैदर्भी" रीति कहते हैं। यह रीति शृंगार रस, करुण रस एवं शांत रस के लिए अनुकूल होती है।

(2) गौडी रीति – गौड़ी रीति को 'परुषा' भी कहते हैं। इसमें दीर्घ-समास-युक्त पदावली का प्रयोग उचित माना जाता है। मधुरता और सुकुमारिता का इससे कोई संबंध नहीं है। इस दृष्टि से वीर रस, रौद्र रस, भयानक रस और वीभत्स रस की निष्पत्ति में गौडी रीति का भरपूर परिपाक होता है। युद्ध आदि का वर्णन इस रीति के प्राण हैं। इसमें ललकार, चुनौती और

उद्दीपन का बाहुल्य होता है। कर्ण-कटु शब्दावली और महाप्राण आदि का प्रयोग इसमें अधिक होता है। गौडी या परुषा रीति का काव्य कठिन माना जाता है।

आचार्य मम्मट इसे परिभाषित करते हुए कहते हैं:— 'ओज: प्रकाशकैस्तु परुषा' (अर्थात् जहाँ ओज गुण का प्रकाश होता है, वहाँ परुषा रीति होती है)

(3) पांचाली रीति — पांचाली रीति न तो वैदर्भी की भाँति समासरहित होता है और न गौडी की भाँति समास-जटित। यह मध्यममार्ग है जिसमें छोटे-छोटे समास अवश्य मिलते हैं। इस रीति से काव्य भावपूर्ण और मर्मस्पर्शी बनता है। अनुस्वार का प्रयोग न होने से यह वैदर्भी की तुलना में अधिक माधुर्य युक्त होती है। पांचाली रीति के संबंध में कहा गया है — "माधुर्य सौकुमार्यो प्रपन्ना पांचाली।"

अर्थात पांचाली में मधुरता और सुकुमारता होती है।

उदाहरण —

'मानव जीवन-वेदी पर, परिणय हो विरह-मिलन का।
सुख-दुःख दोनों नाचेंगे, है खेल, आँख का मन का।।"

इस उदाहरण में अनुनासिक शब्द का अभाव है। जीवन-वेदी, विरह-मिलन और सुख-दुःख में समास है। कर्ण कटु या महाप्राण का प्रयोग लगभग नहीं किया गया है। शान्त रस का निर्वेद इसमें मुखर है। अतः यहाँ पर पांचाली रीति का सुन्दर निर्वाह हुआ है।